ॐकार फांउडेशन ट्रस्ट द्वारा संचालित दिव्यांग स्वरोजगार अभियान कम्प्यूटरज्ञान से स्वरोजगार

आज जीवन के हर क्षेत्र में कम्प्यूटर का उपयोग बहुत बढ़ गया है। ॐकार फांडेशन ट्रस्ट द्वारा दिव्यांगों को आर्थिक रूप से स्वनिर्भर बनाने हेतु उनके लिए उत्तम शिक्षकों के मार्गदर्शन में ''ॐकार कम्प्यूटर क्लास'' की शुरूआत की जा रही है जिससे दिव्यांग भी कम्प्यूटर का ज्ञान प्राप्त करके नौकरी पा सकें, एवं देश की उन्नति में अपना योगदान दें।

प.पू. संतश्री ॐऋषि की भावना है कि देश का हर दिव्यांग स्वनिर्भर हो, स्वयं की आजीविका के लिए दूसरों पर निर्भर न रहे। प.पू. संतश्री ॐऋषि के अनुसार यदि देश के दिव्यांग स्वरोजगार से वंचित रहेंगे, मुख्यधारा में नहीं आएँगे तो भारत विकसित देशों की श्रृंखला में अपना स्थान नहीं बना पाएगा। तो यह उनके एवं ॐकार फाउंडेशन ट्रस्ट द्वारा दिव्यांगों के उत्कर्ष हेतु शुरू किए गए महाअभियान का एक महत्त्वपूर्ण कदम है..... आपका आशीर्वाद एवं योगदान अपेक्षित है....

अप्रैल : २०१७ सहयोग शुल्क : रु. १.०० अंक : ४

दिव्यांग सेतु

संपादक : संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

हमें उत्साहपूर्वक एक ऐसे समाज की स्थापना के प्रयास जारी रखने होंगे, जहाँ दिव्यांगों को समानता का अधिकार मिले।
– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी

ॐકાર ફાઉન્ડેશન ટ્રસ્ટ
''માનવસેવા એ જ ઈશ્વરસેવા''

दिव्यांग सेवा मेरे लिए ईश्वर की सेवा के समकक्ष है
– आत्मारामजी परमार

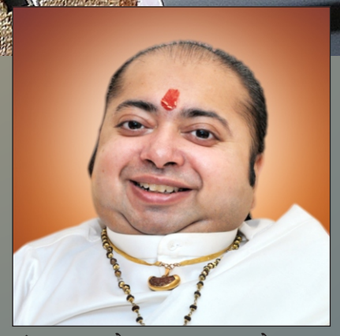

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट सरकार के साथ सहयोग करते हुए दिव्यांगों को स्वरोज़गार एवं आर्थिक स्वनिर्भरता देने के लिएकटिबद्ध है।
- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

डाउन सिन्ड्रोम, ऑटिज्म, सेरेब्रल पाल्सी एवं
मल्टीपल डिसेबिलिटीज के बारे में
लोगों की जागरुकता बढ़ाने के लिए
मीडिया के माध्यम से जानकारी देते हुए
प.पू. संतश्री ॐऋषि

केन्द्र सरकार द्वारा दिव्यांगों के उत्कर्ष हेतु चलाई जा रही

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल पाल्सी, ऑटीज़्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टीपल डिसेबिलिटी (Cerebral Palsy, Autism, Mental Retardation, Multiple Disability) से असरग्रस्त दिव्यांगों को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रु. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु. ५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगों के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इन्श्योरेन्स मिल सकता है। (निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

- सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र
  (ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)
- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशन कार्ड की प्रमाणित कॉपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशन कार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हों तो)
- बैंक पास बुक की फोटो कॉपी (बैंक के IFSC कोड के साथ)
- उम्र का प्रमाण (वोटिंग कार्ड अथवा जन्म प्रमाण-पत्र अथवा विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र)

यह प्रीमियम
ॐकार फाउन्डेशन
ट्रस्ट द्वारा
भरा जाएगा

दिव्यांगों के लिए स्माईल ईयर
दिनांक २६ जनवरी, २०१७ से दिनांक २६ जनवरी २०१८ तक
ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट NGO के माध्यम से
क्रिस्टल डेन्टल केयर (डॉ. शाश्वत जैन एवं चिकित्सक दल)
दिव्यांगों व शहीद सैनिकों के जरुरतमंद परिवारों के लिए
नि:शुल्क जाँच एवं निदान के लिए प्रतिबद्ध है

મંત્ર યુગપરિવર્તક પ. પૂ. સંતશ્રી ઋષિ પ્રિતેશભાઈના
આશિર્વાદ અને માર્ગદર્શનથી શરુ થયેલ...

KRYSTAL DENTAL CARE

MULTISPECIALTY DENTAL CLINIC
DIGITAL SMILE DESIGN AND IMPLANT CENTRE
180, Titanium City Centre Mall, Near IOC Petrol Pump,
Anandnagar Road, Satellite, Ahmedabad - 380015
Clinic : 079 - 48008004

DSD Digital Smile Design

Dr. Shashwat Jain
+91 99786 01890
M.D.S. - Prosthodontics (Manipal)
PGCOI - Implant Specialist
DSD - Digital Smile Design
TIMINGS :
10.00 am to 08.00pm

શ્રી પી. સી. જૈન
ચાર્ટર્ડ એકાઉન્ટન્ટની
છત્રછાયામાં ચાલતી...

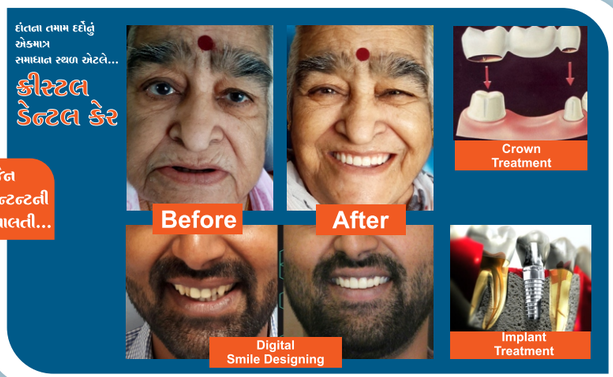

Consultant Prosthodontist
& Implantologist
- Maxillofacial Prosthetics
  Cancer Rehabilitation
  Trauma Rehabilitation
- Implant Rehabilitations
- Digital Smile Designing
- Full Mouth Rehabilitations
- Crowns & Veneers
- Full & Partial Dentrures

WHAT WE DO:
- Implant treatment
- Digital Smile Design
- Dentistry for aged patients
- Fixed and removable dentures
- Crowns and Veneers
- Prosthetic replacements (Eye, Ear, Nose, Fingers)
- Orthodontics
- Dentistry for Kids
- Root canal treatment
- Gum treatment
- Laser dentistry

OPG Facility available
Pick up & Drop Facility for Senior Citizens

Website : www.krystaldentalcare.com | Email: drs@krystaldentalcare.com

फॉर्म

संस्था का नाम :-

संस्था का पता :-

संस्था का प्रश्न :-

mail ID :-

मोबाइल नंबर :-

लेन्डलाइन नंबर :-

आप अपनी संस्था में दिव्यांग बालकों द्वारा फुल स्केप पेज में चित्र बनवाकर हमारी संस्था में भेज सकते हैं। इन चित्रो में प्रथम तीन चित्रों को हमारी संस्था की और से पुरस्कृत किया जाएगा. प्रविष्टियाँ भेजने की अंतिम तिथि 30जून 2017

प्रथम - रु. १५००/-

द्वितीय - रु.१०००/-

एवं तृतीय रु.५००/-

चित्र के पीछे की ओर दिव्यांग बालक/बालिका/व्यक्ति का नाम, संस्था का पूरा नाम, संस्था का पता, लेन्डलाइन नंबर अथवा/एवं मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

किसी भी संस्था की ओर से दिव्यांगो के प्रति किसी भी प्रकार की सलाह, उनकी तकलीफें, उनसे संबंधित प्रश्नों, उनके लिए किए गए कार्यक्रम, उनके विकास के लिए किए गए अच्छे कार्यों की जानकारी इत्यादि हमारी पत्रिका में नि:शुल्क छापी जाएगी।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

प्रेरणास्त्रोत और संपादक :

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक :

मिहीरभाई शाह

M. : 9724181999

संपर्क-सूत्र

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

ई-७२, आयोजन नगर सोसायटी,

श्रेयस क्रोसिंग के पास,

वासणा, अहमदाबाद.

मोबाईल : 9974955365,

9974955125

मुद्रक :

प्रिन्ट विजन प्रा.लि.

आंबावाडी बजार,

अहमदाबाद-६.

फोन : (079) 26405200

अप्रैल : २०१७

पृष्ठ संख्या : १६

वर्ष : ०१

अंक : ४

सहयोग शुल्क : रु. १/-

संपादकीय

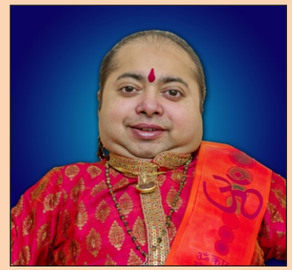

दिव्यांग बच्चे उन तितलियों की तरह हैं, जो अपने कमज़ोर पंखों की वजह से अकेले उड़ान भरने में समर्थ नहीं होते। वो भी उतने ही खूबसूरत हैं, जितने की दूसरे पर हाँ, उन्हें पंख फैलाने के लिए मदद की जरूरत है। और यह मदद करना हमारा यानि की समाज का कर्तव्य है।

दिव्यांगों के विकास एवं उत्कर्ष के लिए सक्रिय रहना समाज के प्रत्येक मनुष्य की जिम्मेदारी है। जहाँ एक ओर हमारा देश विकासशील देश बनने की प्रक्रिया से गुज़र रहा है, वहीं दूसरी ओर यहाँ दिव्यांगों की स्थिति पिछड़े वर्ग की स्थिति से कुछ अलग नहीं है। इस स्थिति से उबरने के लिए समाज के लोगों को ही माध्यम बनना होगा। दिव्यांगों के सर्वांगीण विकास के लिए सरकार पिछले तीन वर्षों से सराहनीय कदम उठा रही है, परंतु कई बार सरकार द्वारा उठाए गए कदमों, योजनाओं की जानकारी दिव्यांगों तक पहुँच ही नहीं पाती। तो जिस प्रकार अंधकार को दूर करने के लिए दीप से दीप प्रज्जवलित किया जाता है, उसी प्रकार दिव्यांगों के जीवन में छाये अंधकार को दूर करने के लिए हमें भी एक श्रृंखला की तरह कार्यरत रहकर देश के कोने-कोने में रह रहे दिव्यांगों तक उनके उत्थान, उनके विकास के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा उठाए गए कदमों की जानकारी पहुँचानी होगी और तभी हम अपने मानव होने का ऋण सही अर्थों में चुका पाएँगे।

दिव्यांग सेतु पत्रिका के पिछले अंकों को जो उत्साह भरा प्रतिभाव मिला है, उसके लिए हम संस्थाओं के, सरकार के एवं दिव्यांगों के अत्यंत आभारी हैं। इस पत्रिका के माध्यम से दिव्यांगों की बात तथा उनके लिए किए जा रहे कार्यों की जानकारी सीधे प्रधानमंत्री श्री मोदीजी तक पहुँचाने का प्रयास भी सफल रहा है।

भारत सरकार द्वारा RPWD बिल, २०१६ के तहत 'ऑटिज़्म' को भी २१ दिव्यांगताओं में जोड़ा गया है। 'ऑटिज़्म' एक गंभीर रोग है जिसके रोगियों की संख्या दिनों-दिन बढ़ती ही जा रही है। यह चिंता का विषय है। पत्रिका के इस अंक में हम आपको ऑटिज़्म के बारे में जानकारी, ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्तियों के लिए उपलब्धरोजगार के अवसर, साथ ही अपंग मानव मंडल-एक संस्था, श्री अनिलभाई चीनूभाई पारिख - एक ट्रस्टी, जिन्होंने अपना पूरा जीवन दिव्यांग-सेवा के लिए समर्पित कर दिया है के बारे में साथ ही साथ ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा दिव्यांग सेवा के क्षेत्र में किए जा रहे कार्यों की जानकारी देंगे।

अंत में मैं लेखक मार्क ट्वेन द्वारा कहे गए शब्दों की पुनरावृत्ति करते हुए कहना चाहूँगा कि दयालुता एक ऐसी भाषा है जो बहरा भी सुन सकता है और अन्धा भी देख सकता है।

इस पत्रिका को आपके विचारों का इन्तज़ार रहेगा.....

- संत श्री ॐऋषि प्रितेशभाई

एक प्रेरणास्त्रोत श्री अनिलभाई चीनूभाई पारिख

मानव सेवा में अपना सर्वस्व जीवन अर्पण कर दें, ऐसे मनुष्य विरले ही होते हैं । ऐसे व्यक्ति अपने कार्यों के द्वारा समाज के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण बन जाते हैं। ऐसे ही एक व्यक्ति – श्री अनिलभाई चीनूभाई पारिख का परिचय हम आज आपको देना चाहेंगे।

श्री अनिलभाई पारिख अपंग मानव मंडल, अहमदाबाद के ट्रस्टी/प्रमुख हैं। साथ ही साथ उनकी अन्य सामाजिक प्रवृत्तियों के तहत वो जीवन योग फाउन्डेशन एवं विमल प्रकाशन ट्रस्ट के भी ट्रस्टी हैं।

श्री अनिलभाई अभी तक अपंग मानव मंडल को व्यक्तिगत रूप से एवं अन्य चेरिटेबल ट्रस्टों द्वारा रु. ४०.०६ लाख से भी ज्यादा का दान दे चुके हैं। वो इस संस्था से वर्ष १९७८ से जुड़े हुए हैं। संस्था के प्रमुख पद पर रहते हुए उनकी देखरेख में अनेक सेवाकीय कार्य किए जा रहे हैं, जो सिर्फ अहमदाबाद शहर तक ही सीमित नहीं हैं।

गुजरात में सन् २००१ में आए विनाशकारी भूकंप के पश्चात उनकी देखरेख में विभिन्न शहरों में जैसे पालनपुर, साणंद, अंजार, ध्रांगध्रा, धंधुका, मोरबी, दाहोद इत्यादि में ४६ फिज़ियोथैरेपी, अस्थिविषयक निदान, साधन सहायता शिविरों का आयोजन किया गया था तथा ६ स्थानों जैसे ध्रांगध्रा, अंजार, मुन्द्रा, जोरावर नगर में फिज़ियोथैरेपी केन्द्र शुरु किए गए, जो आज भी कार्यरत हैं।

अपंग मानव मंडल के ट्रस्टी/प्रमुख पद पर रहते हुए श्री अनिलभाई की देखरेख में चल रही विभिन्न प्रवृत्तियाँ इस प्रकार हैं –

कुमार छात्रालय संकुल में चलती प्रवृत्तियाँ –

(१) प्राथमिक शाला
(२) माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शाला
(३) श्री चीनूभाई नारणभाई बुक बैंक
(४) कुमार छात्रालय
(५) प्रिन्टिंग एवं ग्राफिक आर्ट ट्रेनिंग सेन्टर
(६) कुमार सिलाई तालीम केन्द्र
(७) अद्यतन कम्प्यूटर तालीम केन्द्र
(८) फिज़ियोथैरेपी सेन्टर
(९) पुर्नस्थापन केन्द्र
(१०) पुस्तकालय
(११) फैशन टेक्नोलॉजी ट्रेनिंग सेन्टर
(१२) सुमन उद्यान
(१३) बेकरी प्रोडक्टस् तालीम एवं उत्पादन केन्द्र
(१४) मॉडर्न स्टडी सेन्टर
(१५) शिक्षा के साथ कमाएँ प्रोजेक्ट
(१६) हेल्पलाइन

कन्या छात्रालय संकुल में चलती प्रवृत्तियाँ –

(१) कन्या छात्रालय
(२) सिलाई तालीम वर्ग, एम्ब्रायडरी तालीम वर्ग
(३) इन्डोर-आउटडोर फिज़ियोथैरेपी सेन्टर
(४) पीडीयाट्रिक फिज़ियोथैरेपी सेन्टर
(५) स्पास्टीक लर्निंग एंड डे-केयर सेन्टर
(६) हेल्थ सेन्टर
(७) पुस्तकालय सह मनोरंजन कक्ष
(८) फैशन एंड ऐपरल डिज़ाईन ट्रेनिंग सेन्टर
(९) ऑडियोलॉजी एंड स्पीच लेंग्वेज पेथोलॉजी सेन्टर

साथ ही श्री अनिलभाई, जीवन योग फाउन्डेशन के ट्रस्टी के रूप में सेवाएँ देते हैं। यह ट्रस्ट उन व्यक्तियों एवं संस्थाओं, जिन्हें आध्यात्मिकता में रूचि है, की आर्थिक रूप से मदद करता है।

समाज के ऐसे अग्रणी व्यक्ति जिन्होंने अपना समग्र जीवन तन-मन-धन से समाज को ही अर्पण कर दिया है, प्रेरणा के स्रोत हैं। हम आशा रखते हैं कि समाज ऐसे निष्ठावान व्यक्तियों, गुरुजनों से प्रेरणा ग्रहण करते हुए उनके दिखाए रास्ते पर चलता रहेगा, एक नए सुंदर समाज के निर्माण की दिशा में..... ऐसी शुभेच्छा।

अपंग मानव मंडल, अहमदाबाद

अपंग मानव मंडल, एक NGO (गैर सरकारी संस्थान) है जिसकी स्थापना सन् १९५८ में हुई थी और यह बॉम्बे पब्लिक ट्रस्ट एक्ट १९५० एवं सोसायटीज़ रजिस्ट्रेशन एक्ट, १९६० के तहत रजिस्टर्ड है। मंडल का उद्देश्य दिव्यांगों की शिक्षा, व्यवसायिक प्रशिक्षण पुनर्वास, उन्नति, बेहतर स्वास्थ्य एवं कल्याण की देखभाल करना है। यह एक चेरीटेबल नॉन प्रॉफिटेबल संगठन है, जहाँ दिव्यांगों को मुफ्त में शिक्षा, व्यवसायिक प्रशिक्षण एवं पुनर्वास की सुविधा उपलब्धहैं। समान विचारधारा वाले लोगों के सहयोग से अपंग मानव मंडल दिव्यांग व्यक्तियों को एक सम्मानित, गरिमामय एवं स्वतंत्र जीवन देने के लिए प्रतिबद्ध है और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वहाँ अनेक प्रकार की प्रवृत्तियाँ चलाई जाती है, जिनमें से एक है – स्व.श्री समीर दुष्यंतकुमार साहेब बेकरी प्रोडक्टस प्रशिक्षण एवं उत्पादन केन्द्र

दिव्यांगों को बेकरी उत्पादन के विषय में प्रशिक्षित करने के लिए इस केन्द्र की शुरुआत की गई जहाँ उन्हें एक्सपर्टस द्वारा विविधबेकरी प्रोडक्टस जैसे ब्रेड, टोस्ट, बिस्किट, क्रीम रोल इत्यादि बनाना सिखाए जाते हैं। उत्पादित माल के विक्रय से प्राप्त राशि भी दिव्यांगों को दी जाती है ताकि उनका उत्साहवर्धन हो और यह कार्यक्रम उन्हें प्रशिक्षण एवं रोजगार, दोनों प्रदान कर सके। संस्था के छात्रालय में रहते करीब ३५० दिव्यांग बालक-बालिकाओं को भी इस बेकरी द्वारा बनाया गया शुद्ध एवं पौष्टिक नाश्ता दिया जाता है।

इन उत्पादित वस्तुओं के विक्रय के लिए दो काउंटर खोले गए हैं जिनमें से एक तो संस्था के कंपाउंड में ही है और दूसरा श्री ठाकोरभाई देसाई हॉल में स्थित हैं।

संस्था का पता है
अपंग मानव मंडल
डॉ. विक्रम साराभाई रोड, AMA के सामने, अटीरा के पीछे, वस्त्रापुर, अहमदाबाद.
फोन : (०७९) २६३०८१५६, २६३०२६४३

एक चुनौती – ऑटिज़्म

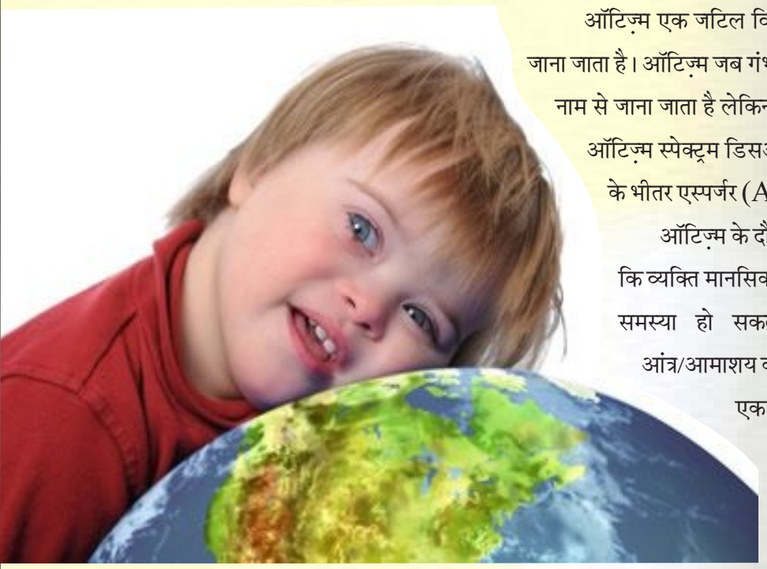

ऑटिज़्म एक जटिल विकास (शारीरिक/मानसिक) विकलांगता के रूप में जाना जाता है। ऑटिज़्म जब गंभीर रूप से होता है तो इसे ऑटिस्टिक डिसऑर्डर के नाम से जाना जाता है लेकिन जब ऑटिज़्म के लक्षण कम प्रभावी होते हैं तो इसे ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) के नाम से जाना जाता है। एएसडी के भीतर एस्पर्जर (Asperger) सिन्ड्रोम भी शामिल है।

ऑटिज़्म के दौरान व्यक्ति को कई समस्याएँ हो सकती हैं, यहाँ तक कि व्यक्ति मानसिक मंदता का शिकार हो सकता है, बोलने एवं सुनने में समस्या हो सकती है, शारीरिक स्वास्थ्य जैसे नींद अथवा आंत्र/आमाशय की गड़बड़ी, मिर्गी के दौरे आना इत्यादि।

एक बच्चा जन्म के शुरूआती वर्ष में ही ऑटिज़्म की चपेट में आ जाता है, लेकिन इस बीमारी के लक्षण २ से ३ वर्ष की आयु में नज़र आने शुरू होते हैं।

ऑटिज़्म पूरी दुनिया में फैला हुआ है। वर्ष २०१० तक विश्व में तकरीबन ७ करोड़ लोग ऑटिज़्म से प्रभावित थे। शोधके अनुसार अमेरिका जैसे विकसित देश में ६८ में से १ बच्चा ऑटिज़्म का शिकार है। दुनियाभर में ऑटिज़्म प्रभावित रोगियों की संख्या मधुमेह, कैंसर एवं एड्स के रोगियों की संख्या मिलाकर भी उनसे अधिक है। शोधसे यह भी बात सामने आई है कि ऑटिज़्म महिलाओं के मुकाबले पुरुषों में (४ से ५ गुना ज्यादा) अधिक देखने को मिला है और पिछले कुछ वर्षों से ऑटिज़्म रोगियों की संख्या सालाना १० से १७% तक बढ़ी है। हालाँकि इस संख्या के लगातार बढ़ने की कोई ठोस वजह अभी तक नहीं पाई गई है फिर भी वैज्ञानिक पर्यावरण के हमारे स्वास्थ्य पर असर को इसका एक मुख्य कारण मानते हैं।

ऑटिज़्म होने का क्या कारण है ? कुछ समय पूर्व तक इस सवाल का जवाब शायद यही था कि "हमें नहीं पता" पर अब इस क्षेत्र में की जा रही विभिन्न शोधों से धीरे-धीरे इस सवाल के जवाब प्राप्त हो रहे हैं। सबसे पहली बात तो यह है कि अब हमें पता है कि ऑटिज़्म होने की कोई एक ही वजह नहीं है ठीक उसी तरह जैसे ऑटिज़्म भी कोई एक ही प्रकार का नहीं होता। पिछले कुछ वर्षों में वैज्ञानिकों ने ऑटिज़्म के साथ जुड़े कई दुर्लभ आनुवंशिक परिवर्तनों या उत्परिवर्तनों की पहचान की है। यह परिवर्तन अपने आप में ही ऑटिज़्म हो सकने के लिए पर्याप्त हैं। फिर भी ऑटिज़्म के ज्यादातर मामलों में इन आनुवांशिक कारणों के साथ पर्यावरणीय कारण भी पाए गए हैं। विभिन्न शोधों के अनुसार यातायात प्रदूषण वाले क्षेत्र के घरों में रहने वाले बच्चों में ऑटिज़्म होने की संभावना तीन गुना अधिक हो जाती है ।

शोधकर्ताओं के अनुसार अपने से १० साल या इससे अधिक छोटे जीवनसाथी से शादी करने वाले लोगों के बच्चों में 'ऑटिज़्म' का खतरा अधिक होता है। इसके अलावा गर्भधारण के समय अधिक उम्र (माता-पिता दोनों की), गर्भावस्था के दौरान माँ को कोई गंभीर बीमारी होना (फ्लू अथवा एक सप्ताह से ज्यादा बुखार रहना), जन्म देते वक्त कुछ दिक्कतें जैसे बच्चे के मस्तिष्क में ऑक्सीजन के अभव की अवधि, बच्चे का समय से पहले जन्म या बच्चे का गर्भ में ठीक से विकास ना होना। यहाँ यह जानना महत्वपूर्ण है कि उपरोक्त कारण अकेले ही ऑटिज़्म की वजह नहीं बनते बल्कि आनुवांशिक जोखिम वाले कारकों के संयोजन के साथ ऑटिज़्म होने का खतरा बढ़ा देते हैं।

हाल में हुए अनुसंधानों के अनुसार यदि महिला गर्भावस्था के दौरान फॉलिक एसिड युक्त आहार अथवा टेबलेट्स (कम से कम 600 mcg एक दिन में) ले तो बच्चे में होने वाले ऑटिज़्म के खतरे को टाला जा सकता है।

बच्चों में ऑटिज़्म को बहुत आसानी से पहचाना जा सकता है। बच्चों में ऑटिज़्म के कुछ लक्षण इस प्रकार हैं –

- कभी-कभी किसी भी बात का जवाब नहीं देते या फिर बात को सुनकर अनसुना कर देते हैं। कई बार आवाज लगाने पर भी जवाब नहीं देते।
- किसी दूसरे व्यक्ति की आँखों में आँखें डालकर बात करने से घबराते हैं।
- अकेले रहना अधिक पसंद करते हैं।
- बात करते हुए अपने हाथों का इस्तेमाल नहीं करते या फिर अंगुलियों से किसी तरह का कोई संकेत नहीं करते।
- बदलाव पसंद नहीं करते। रोजाना एक जैसा काम करना अथवा एक ही तरक के खेल खेलना पसंद करते हैं।
- बहुत अधिक बेचैन होना, बहुत अधिक निष्क्रिय होना या फिर बहुत अधिक सक्रिय होना। कोई भी काम चरम सीमा पर करते हैं।
- अधिक व्यवहार कुशल नहीं होते।
- इन बच्चों का विकास सामान्य बच्चों की तरह ना होकर बहुत धीमा होता है। लड़कियों के मुकाबले लड़कों की इस बीमारी की चपेट में आने की ज्यादा संभावना होती है।

ऑटिज़्म के प्रति हमारी अवधारणा समय के साथ परिवर्तित हुई है। घरवालों का प्यार, सहयोग एवं शिक्षा ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्ति में एक सकारात्मक परिवर्तन ला सकती है। चूँकि इसके लक्षण हर व्यक्ति में समान नहीं होते, कुछ में कम तो कुछ में गंभीर लक्षण हो सकते हैं तो हर व्यक्ति को अलग-अलग प्रकार के सहयोग एवं इलाज की आवश्यकता होती है। ऐसे बच्चों का उनकी क्षमताओं एवं कमजोरियों को पहचानते हुए, समय पर किया गया इलाज उन्हें एक आत्मनिर्भर व्यक्तित्व बनाने में सहयोगी सिद्ध होता है।

प्रोजेक्ट प्रयास
– ऑटिज़्म सोसायटी ऑफ इंडिया की एक पहल

प्रोजेक्ट प्रयास, ऑटिज़्म सोसायटी ऑफ इंडिया की एक पहल है, जिसकी शुरूआत सन् २०११ में हुई। प्रयास एक ऐसा मिशन है जो गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं स्वतंत्र आजीविका के प्रति ऑटिज़्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर प्रभावित व्यक्तियों की क्षमताओं को उभार कर मजबूत बनाता है। इसकी शुरूआत एक छोटे से कम्प्यूटर ट्रेनिंग सेन्टर द्वारा हुई थी जहाँ i pad का उपयोग एक प्रारंभिक टूल के रूप में किया गया था। ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्ति कार्यक्षेत्र में न केवल अपने सहभागियों, वरन भावी नियोक्ताओं के लिए प्रेरणा रूप होते हैं। आज बहुत सी कंपनियाँ ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्तियों को उनकी अनूठी ताकत और मूल्यों के लिए काम पर रखना चाहती हैं।

प्रोजेक्ट प्रयास के तहत शुरू किए गए ऑन-लाइन फ्री रिसोर्स प्रोग्राम 'दक्ष' सेन्टर्स ऑटिज़्म प्रभावित लोगों को तकनीकी प्रशिक्षण देने के साथ साथ ही उनके कम्प्यूटर कौशल्य एवं आत्मविश्वास को बढ़ाने में सहायक है। 'दक्ष' एक प्रौद्योगिकी आधारित प्रशिक्षण के मॉड्यूल पर आधारित है जो एक निर्धारित पाठ्यक्रम का पालन करता है।

व्यवसाय की दृष्टि से ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्तियों के लिए कुछ तकनीकी क्षेत्र अच्छे हैं जैसे कोडिंग, ग्राफिक डिजाइनिंग, सॉफ्टवेयर परीक्षण, डाटा एंट्री ऑपरेशन। अन्य विकल्पों मे कम्प्यूटर हार्डवेयर या कोई अन्य इलेक्ट्रिकल उपकरण बनाना भी हो सकते हैं। गणित संबंधित क्षेत्र एवं लायब्रेरी साइंस में भी ऑटिज़्म प्रभावित अच्छे होते हैं। इसके अतिरिक्त ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्तियों की कला, संगीत एवं बागवानी के क्षेत्र में भी रूचि देखी गई है। कुछ प्रसिद्ध हस्तियाँ जिन्होंने ऑटिज़्म से प्रभावित होने के बावजूद अपने क्षेत्रों में नई ऊँचाईयों को हासिल किया –

Amadeus Mozart – प्रसिद्ध संगीतज्ञ
Daryl Hannah – अभिनेत्री
Caiseal Mor – लेखक, संगीतज्ञ एवं कलाकार
Tito Mukhopadhyay – लेखक, कवि एवं दार्शनिक
Sir Issac Newton – गणितज्ञ
Charles Darwin – वैज्ञानिक/प्रकृतिवादी

महत्वपूर्ण बात यह है कि रोजगार का प्रकार क्या है और वो ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्ति की मुख्य कुशलता से किस प्रकार संबंधित है। प्रौद्योगिकी से संबंधित नौकरियाँ ऑटिज़्म प्रभावित लोगों के लिए एक अच्छा कैरियर साबित हो सकती हैं क्योंकि किसी एक तकनीक पर ध्यान देना, किसी एक ऑर्डर या अनुक्रम को पसंद करना व उसी की पुनरावृत्ति करना उनकी मूल ताकत होती है।

भारत एवं विदेशों में ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्तियों के लिए रोजगार का वर्तमान परिदृश्य –

जहाँ एक ओर भारत में आज भी ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्तियों की सही संख्या का पता नहीं है वहीं विदेशों में जैसे यू.एस, डेनमार्क एवं आस्ट्रेलिया में स्थिति अलग है। बड़ी बड़ी प्रौद्योगिकी कंपनियों जैसे Microsoft और SAP ने ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्तियों के लिए समर्पित कार्यक्रम एवं रोजगार के अवसर खोल दिए हैं। भारत को इस क्षेत्र में विचार करने एवं कार्य करने की बहुत आवश्यकता है। उसके लिए सबसे पहले जरूरी है कि हम 'ऑटिज़्म' को एक अलग नजरिये से देखें, उसे जल्दी पहचानें और अनुमानित दिव्यांगता में छिपी हुई क्षमता को देखते हुए उसे निखारें। इसके लिए हमें परिवारों, समाज, समुदायों, सरकार एवं कॉर्पोरेट जगत के मध्य ऑटिज़्म जागरूकता अभियान शुरू करने होंगे।

भारत में भी प्रोजेक्ट प्रयास की मदद से SAP के रोजगार की दिशा में बढ़ते कदम सुविधाजनक हुए हैं। इसके तहत किए गए कार्यों एवं डेनमार्क के एक संगठन Specialisterne की कहानी की ही प्रेरणा थी जिससे SAP ने ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्तियों को रोजगार प्रदान करने की पहल की। SAP लेब बेंगलूरू ने अपने यहाँ करीब १६, Accenture और Allegis ने एक-एक एवं हिमालया ग्रुप ने दो ऑटिज़्म से प्रभावित व्यक्तियों को अपने यहाँ नौकरी दी है। लेमन ट्री होटल ग्रुप ने भी ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्तियों को काम पर रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यदि ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्तियों को सही ढंग से शिक्षा एवं प्रशिक्षण दिया जाए तो वो देश की अर्थव्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं।

अभी हाल ही में भारत सरकार द्वारा लिए गए एक महत्वपूर्ण कदम के तहत ऑटिज़्म को RPWD एक्ट, २०१६ में जोड़ा गया है, जिससे ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्ति को एक सामान्य नागरिक की तरह सभी अधिकार प्राप्त होंगे। अब चूँकि यह अधिनियम लागू है, तो यह महत्वपूर्ण है कि सभी संबंधित नीतियों का प्रभावी ढंग से क्रियान्वयन हो।

साथ ही ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्तियों की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए उनके लिए प्रशिक्षण एवं शिक्षा के नए तरीके अपनाए जाएँ और नौकरियों में उनके लिए आरक्षण का कोटा बढ़ाया जाए क्योंकि ऑटिज़्म दूसरी दिव्यांगताओं से कहीं अधिक गंभीर है।

अब समय आ गया है कि छोटे उद्यमी/कंपनियाँ भी ऑटिज़्म प्रभावित लोगों के लिए रोजगारलक्षी स्थितियों का निर्माण करें ओर उन्हें एक सम्मानपूर्वक आत्मनिर्भर जिन्दगी जीने का अवसर दें।

Communication DEALL

ऑटिज़्म के लक्षणों को जल्दी पहचानते हुए प्रभावित बच्चों के इलाज के लिए भारत का अपना कार्यक्रम

ऑटिज़्म के लक्षणों को प्रारंभिक अवस्था में ही पहचानते हुए हस्तक्षेप करने का कार्यक्रम डॉ. प्रतिभा कारंथ द्वारा विकसित किया गया। डॉ. कारंथ एक अग्रणी भाषा विज्ञानी हैं, जिन्हें अपने कार्यक्षेत्र में ४० से भी अधिक वर्षों का अनुभव है। भारत में ASD से प्रभावित बच्चों की बढ़ती हुई संख्या एवं उस अनुपात में इलाज नहीं के बराबर उपलब्धहोने के बीच बढ़ती हुई खाई को कम करने के मूल उद्देश्य से शुरू किया गया कार्यक्रम आज काफी विकसित हो गया है। इसके अंतर्गत ऑटिज़्म को प्रारंभिक अवस्था में ही पहचानते हुए उसके बढ़ते लक्षणों में गहन हस्तक्षेप करते हुए बच्चों की क्षमता को उभारने का प्रयास किया जाता है, जिससे वो मुख्यधारा में बने रह सकें।

इस कार्यक्रम की शुरूआत नवंबर २००० में बेंगलूरू में एक केन्द्र की स्थापना से हुई जो बढ़ते बढ़ते आज १९ शहरों में २३ केन्द्रों के रूप में कार्यरत है।

बहुत से ऑटिज़्म प्रभावित बच्चों को इन केन्द्रों में जाकर अकल्पनीय फायदे हुए हैं। आइए जानते हैं, इन्हीं में से एक बच्चे के बारे में –

श्रेया एक ७ साल की बच्ची है, जो पिछले ढाई वर्षों से एक विशेष स्कूल 'दीपशिखा' और उसके, COMDEALL केन्द्र से जुड़ी हुई है। जब वो पहली बार आई थी तो उसके व्यवहार, बोलने-चालने, किसी बात को समझने में उसे बहुत कठिनाईयाँ थी। वो कुछ खास खिलौनों से ही खेलना पसंद करती थी और साथ ही हर चीज़ को या तो चबाती थी या फेंक देती थी। उसकी श्रवण शक्ति एवं संवेदनशीलता भी कम थी। इन सब कठिनाईयों के बावजूद भी वो अपना क्लासवर्क दूसरे बच्चों की अपेक्षा जल्दी पूरा करती थी और उसकी याददाश्त भी बहुत अच्छी थी।

आज श्रेया एक नियमित स्कूल की छात्रा है और उसे अपने स्कूल का पाठ्यक्रम सीखने में मददरूपी हैं 'दीपशिखा' के COMDEALL केन्द्र में स्कूल के समय के बाद बिताए जाने वाले तीन घंटे। उसे अब समूह में खेलना और पढ़ना भी पसंद है। उसके लक्षणों के अनुसार बनाई गई कार्यशैली को उसे अच्छे दोस्त बनाने में, तनाव को नियंत्रण में रखने में, पाठ्यक्रम याद करने में अत्यंत असरकारक साबित हुई है।

पिछले दो वर्षों में उसके परिवार ने बहुत सी खुशियाँ बटोरी हैं। अब श्रेया छोटे-छोटे कामों के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं है। वो आज रंगों को मिलाने, आकार, वर्णमाला एवं अंक पहचानने में सक्षम है। वो पेंसिल पकडकर चित्र बना लेती है, वर्णमाला लिख लेती है। हर स्थिति में अब वो अपने तनाव को नियंत्रण में रखती है। उसकी संवेदन शक्ति भी पहले से बेहतर हुई है।

और अब श्रेया ने अपने नए पाए आत्म-विश्वास के साथ बात-चीत करने के नए तरीके ढूँढे हैं (क्योंकि वो अभी भी बोल नहीं सकती पर बहुत कुछ कहना चाहती है)। अब वो एक ही कार्य को लंबे समय तक कर पाती है और घंटों दूसरे बच्चों के साथ क्लास में बैठने लगी हैं। शाम को उसे अपने माता-पिता के साथ बगीचे में टहलना, झूला झूलना, अपना पसंदीदा म्यूज़िक चैनल देखना, बॉलीवुड गानों पर नाचना, अपने पिता के टेबलेट पर खेलना... यह सब बहुत पसंद है। उसकी माँ का कहना है - मेरी बेटी की कहानी पढ़ने के लिए धन्यवाद। आशा करती हूँ कि इससे दूसरे माता-पिताओं को प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिलेगा। COMDEALL एक आशा की किरण है, जो हमारे बच्चों को ASD के साथ भी सामान्य ढंग से जीना सिखाती है, खुशियों और आँसुओं के साथ भी!

ऑटिज़्म जागरूकता दिवस

- ऑटिज़्म जागरूकता दिवस हर साल २ अप्रैल के दिन मनाया जाता है।
- संयुक्त राष्ट्र महासभा ने सन् २००७ में दो अप्रैल के दिन इसकी शुरूआत की थी।
- हाल के सर्वेक्षण से पता चला है कि विश्व भर में हर ६८ व्यक्तयों में से एक व्यक्ति ऑटिज़्म से प्रभावित है। यानि की अकेले भारत में ही ऑटिज़्म प्रभावित व्यक्तियों की संख्या १८ लाख से अधिक है।
- विश्व ऑटिज़्म जागरूकता दिवस को चिन्हित करने के लिए अहमदाबाद, गुजरात में ऑटिज़्म से प्रभावित १५०० से अधिक बच्चों एवं बड़ों द्वारा साबरमती रिवरफ्रन्ट पर एक मानव श्रृंखला का निर्माण किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन राज्य के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय द्वारा किया गया था। इस अवसर पर अंधजन मंडल, अहमदाबाद के दिव्यांगों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किये गये।
- मुंबई के बांद्रा-वर्ली सी-लिंक को विश्व ऑटिज़्म जागरूकता दिवस के दिन नीले रंग की रोशनी से सजाया गया जो कि विश्व भर में हुए अभियान 'Light up Blue' का हिस्सा था।

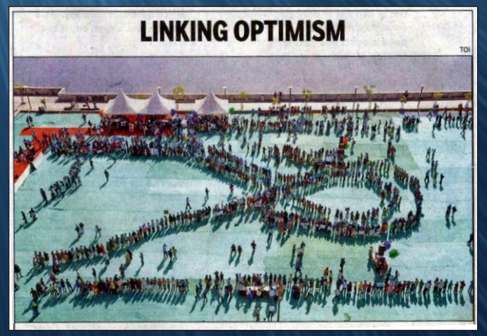

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा दिव्यांगों के लिए की गई सेवाकीय प्रवृत्तियाँ

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा दिव्यांगों के उत्थान के लिए किए जा रहे अथक प्रयासों की कड़ी में इस महीने किए गए कार्य इस प्रकार रहे –

- ४०० से भी अधिक दिव्यांगों को निरामय पॉलिसी प्रदान की गई जिसका प्रीमियम संस्था की ओर से भरा गया।
- २०० से भी अधिक दिव्यांगों को दिव्यांग पहचान पत्र मिले।
- ता. २४-३-२०१७ से ता. ३०-३-२०१७ तक ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट के कार्यालय ई-७२, आयोजन नगर, पालड़ी, अहमदाबाद में दिव्यांग व्यक्तियों को यूनिवर्सल आई कार्ड उपलब्धकराने में मदद हेतु केम्प का आयोजन किया गया।

यूनिवर्सल आईडी फॉर पर्सन्स विथ डिसेबिलिटीज़ (UDID) नाम का प्रोजेक्ट पूरे देश में दिव्यांगों को यूनिवर्सल आई कार्ड प्रदान करने के लिए भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अंतर्गत दिव्यांग सशक्तिकरण विभाग द्वारा हाथ में लिया गया है जिससे वो सरकार द्वारा चलाई जा रही सभी योजनाओं का पूरी तरह लाभ उठा सकें। इस प्रोजेक्ट के तहत समाज सुरक्षा विभाग द्वारा जारी किए गए दिव्यांग पहचान पत्र धारक दिव्यांगों को जरूरी दस्तावेजों के साथ, अलग-अलग जगह लगाए गए शिविरों में उपस्थित रहना था। अहमदाबाद, गुजरात में तीन जगह पर इस कार्य हेतु शिविर लगाए गए। ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट के माध्यम से २००० से भी अधिक दिव्यांगों ने UDID के लिए फॉर्म भरे।

'दिव्यांग सेतु' पत्रिका में अपना विज्ञापन देकर आप भी दिव्यांगों की मदद के पुनीत कार्य में सहभागी बन सकते हैं।

विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं

Title-2	रू. १०,०००/-
Title-3	रू. १०,०००/-
Title-4	रू. १०,०००/-
आधा पेज –	रू. ५,०००/-

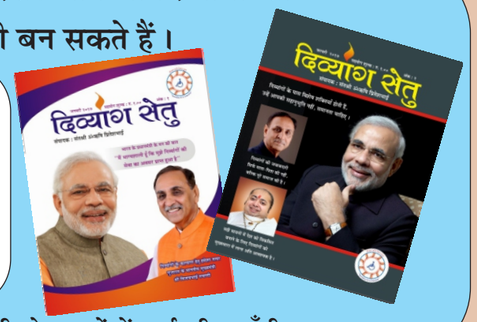

विज्ञापन से प्राप्त समस्त राशि दिव्यांग कल्याणकारी योजनाओं में खर्च की जाएँगी।